pan>

Title : Observation regarding maintaining Order, Discipline and Decorum of House

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, पिछले दिनों इस सदन में हुई घटनाओं ने हम सभी को आहत किया है । मुझे भी आहत किया है और देश की जनता को भी इन सारी घटनाओं को देखकर पीड़ा पहुंची है ।

माननीय सदस्यगण, देश की लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था संसद है । इस संसदीय परंपरा पर हम सभी को गर्व है । इस परंपरा में चर्चा, संवाद और सकारात्मक बहस से इस सदन की प्रतिष्ठा स्थापित की गई है । हमारे पूर्ववर्ती अध्यक्षों ने और सदन के सभी नेताओं ने सामूहिक रूप से हमेशा इस सदन की उच्च मर्यादा और परंपराओं का पालन करते हुए इसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया है । इस सदन की रक्षा करना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है । विषयों पर सहमति और असहमति हो सकती है, बहस और चर्चा करते समय कई मुद्दों पर हमारी संसदीय परंपराओं में हमेशा तीखे वाद-विवाद भी हुए हैं, चर्चाएं भी हुई हैं, लेकिन हमने सदन की गरिमा हमेशा बनाकर रखी है ।

मेरा आपसे आग्रह है कि चर्चा हो, संवाद हो, तर्क हो, सहमति हो, असहमति हो, अगर किसी मुद्दे पर मत की भिन्नता हो तो बैठकर चर्चा की जाए, लेकिन सदन चले । यह सभी माननीय सदस्य चाहते हैं, सभी दल के माननीय सदस्य चाहते हैं । मेरी कोशिश रहती है, मैं सभी माननीय सदस्यों को पर्याप्त समय और अवसर उनकी अभिव्यक्ति के लिए देता हूं ।

माननीय सदस्य भी व्यक्तिगत चर्चा में मुझसे कहते हैं कि सदन चले ताकि हम मुद्दों को उठा सकें, अपने संसदीय क्षेत्र के विषयों को भी उठा सकें । मुझे आशा है कि आज हम सहमति के बाद यहां मिले हैं । मेरी हमेशा से इच्छा रहती है कि सदन में व्यवधान न हो । जब पहली बार आप सभी ने सदन में अध्यक्ष के

रूप में चुनकर भेजा, जब पहले सदन के सत्र के दौरान सदन की कार्रवाई स्थगित हुई थी, मेरे मन में हमेशा यह भावना रहती है कि सदन एक मिनट के लिए भी स्थगित न हो ताकि अखबार में खबर न बने कि करोड़ों रुपये संसद की कार्रवाई में खर्च हो रहा है और संसद नहीं चल रही है ।

मेरा हमेशा मत रहता है, विशेष रूप से अभी आजादी का अमृत महोत्सव है, अमृतकाल है । इस अमृतकाल में हम समस्याओं और मुद्दों पर चर्चा करें । लोकतंत्र में हमेशा चर्चा और संवाद से इन समस्याओं का समाधान निकला है । आजादी के बाद हमने गंभीर से गंभीर समस्याओं का समाधान इस संसद के माध्यम से निकाला है ।

हमने 75 सालों के दौरान लोक कल्याण के माध्यम से देश में बदलाव किया है । मुझे आशा है कि इस अमृत काल में और गहनता से मंथन होगा और इससे जो अमृत निकलेगा, उससे अधिकतम जनता का कल्याण कर सकेंगे ।

मेरा आप सभी से पुन: आग्रह है कि हम सदन की मर्यादा और संयम बनाए रखें ताकि सदन की मर्यादा न टूटे । ये नियम और प्रक्रियाएं आपने बनाई हैं और आपने मुझे इन नियमों और प्रक्रियाओं से सदन चलाने की जिम्मेदारी दी है । इसलिए मैं आप सभी माननीय सदस्यों से आग्रह करता हूं कि अपने दल के नेता से बात करें और माननीय सदस्य स्वयं भी नियम और प्रक्रियाओं का पालन करते हुए, संयम और अनुशासन बनाते हुए लोकतंत्र की इस सर्वोच्च संस्था की मर्यादा को बनाए रखें । यही मेरा आपसे आग्रह है ।

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर): माननीय अध्यक्ष जी, हमें आम लोगों के नुमाइंदे होने के नाते सदन में आने और चर्चा में शिरकत करने का मौका मिलता है । हम दूर-सुदूर गांवों, कस्बों और शहरों से सिर्फ चर्चा के लिए, आम लोगों की बात

रखने के लिए, सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए चुनकर आते हैं । आम लोगों की तकलीफों का निवारण करने के लिए हमारी तरफ से जिस हद तक प्रयास होना चाहिए, उस हद तक हम प्रयास करें, यही हमारा फर्ज बनता है, जिम्मेदारी बनती है ।

महोदय, मैं सिर्फ एक विषय आपके सामने रखना चाहता हूं कि इस सेशन में शुरू के दिन आपने एक ऑल पार्टी मीटिंग बुलाई थी । उस मीटिंग में आपने खुद स्वीकारा था कि सदन की उत्पादकता यानी प्रोडक्टिविटी 105 फीसदी हो चुकी है । यह खुद एक रिकॉर्ड है ।

माननीय अध्यक्ष: आप विषय के बारे में कह दें ।

श्री अधीर रंजन चौधरी: आप मुझे बोलने दें । आज इतने दिनों बाद खड़े हैं । मैं किसी की आलोचना नहीं कर रहा हूं, अपनी बात कह रहा हूं । सिर्फ माननीय प्रधान मंत्री मन की बात करें और हम न करें, यह तो ठीक नहीं है । बात यह है, मैं बड़े दावे के साथ कह सकता हूं कि उत्पादकता का जो बयान आपने टीवी में दिया, आप हमें चर्चा करने का समय देते हैं, इससे साफ जाहिर होता है कि सारा विपक्ष सदन चलाने के लिए हर संभव प्रयास करता है, अगर न करता तो उत्पादकता का आंकड़ा आपको कैसे मिलता?

महोदय, मैं दूसरी बात कहना चाहता हूं सदन में सत्ता पक्ष हो या विपक्ष हो, दोनों पक्षों के सारे मैम्बर्स, सारे नुमाइंदे आपके मुरीद हैं । मैं बड़े दावे के साथ कह सकता हूं कि सब आपको पसंद करते हैं? किसलिए, क्योंकि आप सबको मौका देते हैं । हम अपनी बात रखें, इसके लिए आप सदन में काफी समय बिताते हैं, यह हमारे लिए बहुत सौभाग्य की बात है । हम सदन चलाने के लिए आते हैं, पिकनिक करने के लिए नहीं आते हैं, हवामहल में घूमने के लिए नहीं आते हैं । हमारे पास कोई मकसद नहीं है कि वहां जाकर गपशप मारें या कोई और काम करें, सिर्फ सदन ही हमारे लिए काम की जगह है । आपने बात कही कि आहत हुए हैं, चोट लगी है । मुझे भी सुनकर बुरा लग रहा है ।

सदन में न पक्ष न विपक्ष, किसी की तरफ से कोई ऐसा बर्ताव नहीं होना चाहिए कि पीठासीन, देश के किसी पद जैसे माननीय प्रधानमंत्री, महामहिम राष्ट्रपति या प्रतिष्ठान को कोई चोट पहुंचे । हम क्यों ऐसा करेंगे? लोग हमें यहां जिम्मेदारी निभाने के लिए भेजते हैं ।

महोदय, मैं एक बात कहूंगा पहले गिरेबान में झांक कर तो देखो, एक-दूसरे पर इल्जाम लगाना बहुत आसान होता है । बात यह है, हम चाहते हैं और हम शुरू के दिन से कह रहे हैं कि निलंबित सदस्यों को बहाल करने के लिए हमें थोड़ा मौका दीजिए, क्योंकि आम लोगों की बात रखने के लिए कभी-कभी बड़े जोर-शोर से मुद्दे उठाने पड़ते हैं । सरकार के रवैये के चलते कभी हमारा प्रदर्शन करना भी जरूरी होता है ।

इसलिए, मैं चाहता हूं कि ये सारे समाधान निकालने के लिए एक जनरल पर्पस और एक रूल्स कमेटी की मीटिंग बुलाई जाए । सारे विपक्षी दल और सत्ता पक्ष मिलकर उसमें चर्चा करें और आम सहमति बनाकर कुछ उपाय निकाला जाए । यहां कोई भी मेम्बर आपको दु:ख देने के लिए नहीं आता है । हमारे पक्ष के जो मैम्बर्स हैं, उनका आपको दु:ख देने की जरा सी भी मंशा और जरा से भी नापाक इरादे नहीं रहते हैं । यह मैं बड़े दावे के साथ कह सकता हूं । अगर आपको चोट पहुंची है तो हम इस विषय को लेकर अपने सभी मम्बर्स से बात करेंगे और अगले दिन आपको चोट न पहुंचे उस विषय पर मैं काफी ध्यान दूंगा । आप हम सब पर भरोसा रख सकते हैं । लेकिन, सदन के अंदर अगर कोई मिनिस्टर महामहिम राष्ट्रपति जी का नाम पुकार के अपमान करे तो यह भी सही नहीं है । यह भी मैं आप से बोलना चाहता हूं । … (व्यवधान)

सर, आप हमारे निलंबित सांसदों को बहाल कीजिए । मैं आपसे यही गुहार लगता हूं । आपसे मेरी यही गुजारिश है ।

*m04 **माननीय अध्यक्ष :** माननीय सदस्यगण, सदन आप सबका है । आप जितनी इसकी मर्यादा और प्रतिष्ठा बनाएंगे, आपकी उतनी प्रतिष्ठा बनेगी । मेरा सदन से आग्रह है । इसमें मैं सार्वजनिक रूप से कहना चाहता हूं कि एक सर्वसम्मति बननी चाहिए कि हमें सदन में प्लेकार्ड लेकर नहीं आना चाहिए । मैं

सभी दलों से यह आग्रह और निवेदन करूंगा कि वे प्लेकार्ड लेकर नहीं आएं क्योंकि, यदि आप प्लेकार्ड लेकर आसन के सामने आएंगे तो सदन के अंदर जो भी आसन पर बैठे होंगे, उसकी मर्यादा बनाए रखने के लिए और सदन की मर्यादा बनाए रखने के लिए हमें न चाहते हुए भी कार्रवाई करनी पड़ती है । हम किसी सदस्य को, जिसको जनता ने चुनकर भेजा है, कोई संसद की कार्यवाही में हिस्सा न ले, यह हम कभी नहीं चाहते हैं । यह कोई भी नहीं चाहता है । इसलिए, मेरा आपसे और सभी दलों के नेताओं से आग्रह है कि प्लेकार्ड लेकर सदन में नहीं आएं । मैं उनको अंतिम बार मौका दे रहा हूं । यदि वे प्लेकार्ड लेकर आएंगे तो मैं न सरकार की सुनूंगा और न इधर की सुनूंगा । मुझे कार्रवाई करनी पड़ेगी ।

श्री अधीर रंजन चौधरी : सर, क्या हम उनको वापस ला सकते हैं?

माननीय अध्यक्ष : अभी रूक जाइए । इसके लिए सरकार प्रस्ताव लाएगी ।

***m05 THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, MINISTER OF COAL AND MINISTER OF MINES (SHRI PRALHAD JOSHI):** Sir, as far as productivity is concerned, जिसको अधीर रंजन जी ने उठाया । मैं सरकार की तरफ से यह बोलना चाहता हूं कि हम प्रोडक्टिविटी बढ़ाने के लिए पूरा प्रयास कर रहे हैं और उसके लिए प्रतिबद्ध हैं । लेकिन, अभी जो दो सप्ताह से हो रहा है, प्राइस राइज विषय के ऊपर चर्चा मांगी गई थी, मैंने ऑल पार्टी मीटिंग में, जो आपकी अध्यक्षता में हुई थी तब भी और जब हमने सरकार की तरफ से ऑल पार्टी मीटिंग बुलाई थी, तब भी हमने कहा था कि हम चर्चा के लिए तैयार हैं । बाद में, Unfortunately, hon. Finance Minister was affected by COVID-19. तब भी मैंने बताया कि as soon as she comes back, डिस्कशन होगा । There will be a discussion. मंगलवार के दिन माननीय वित्त मंत्री जी आ गईं । उसी दिन मैंने आपके साथ डिटेल में चर्चा करके बताया था कि जब आप निर्णय करेंगे, उसी दिन चाहे वह मंगलवार हो, बुधवार हो या गुरुवार हो, हम सरकार की तरफ से चर्चा करने के लिए तैयार हैं । लेकिन, प्रोडक्टिविटी किस कारण कम हुई, वह मुझे अभी भी समझ में नहीं आ

रहा है । I am not able to understand why we have lost productivity in the last two weeks. इस बीच में भी हमने बिल्स पारित किए हैं । उसमें ऑपोजिशन पार्टी की तरफ से कुछ लोगों ने पार्टिसिपेट किया था । उसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूं । जो दो-तीन बिल पारित हुए हैं, उसमें उन लोगों ने, Other than the Congress Party, other parties have participated. मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि जनरल पर्पस मीटिंग बुलानी चाहिए । रूल्स के बारे में और एस्ट्रिंजेंट रूल कैसे लाया जाए, उसके बारे में देखना चाहिए । लेकिन, इस बीच में हमें यह भी सोचना होगा कि जब तक हम रूल चेंज नहीं करते हैं, तब तक हमें एग्जिस्टिंग रूल फॉलो करना है या नहीं करना है, यह भी हमें निर्णय करना है । We have to decide whether to follow the existing rules or not. आपके सामने और आपके मुंह के सामने तख्तियां लाकर इस तरह का जो व्यवहार किया जाता है, ये मंत्रियों के सामने तो कर ही रहे हैं, आपके सामने और पीठ के सामने भी कर रहे हैं । क्या यह ठीक है, इस बारे में हमें सोचना पड़ेगा । इसके लिए अभी तक उन्होंने एश्योर नहीं किया है कि आगे हम तख्तियां लेकर नहीं आएंगे । आपको एश्योर करना चाहिए । यह हमारा रिक्वेस्ट है । आपसे हमारी रिक्वेस्ट है । अगर वह भी नहीं करते हैं तो आपका जो निर्णय है, उसको हम मानने के लिए तैयार हैं । लेकिन, जो उनकी डिमांड थी, हम डे वन से कह रहे हैं, आज भी माननीय वित्त मंत्री जी बैठी हुई हैं । हम चर्चा के लिए पूरी तरह से तैयार हैं । हमारे पास छुपाने के लिए कुछ भी नहीं है । यह मैं स्पष्ट करना चाहता हूं ।

*m06 **माननीय अध्यक्ष :** माननीय सदस्यगण, सभी इस बात से सहमत होंगे कि वे तख्तियां लेकर नहीं आएंगे, इससे बड़ा हाउस कोई नहीं है । क्या सभी सदस्य इससे सहमत हैं?

अनेक माननीय सदस्य : हां-हां ।

माननीय अध्यक्ष : मंत्री जी, आप प्रस्ताव लाइए ।

श्री प्रहलाद जोशी : महोदय, मैं प्रस्ताव लाता हूं ।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप बोल दीजिए ।

… (<u>व्यवधान</u>)

*m07 **श्री प्रहलाद जोशी :** महोदय, जैसा कि आपने आदेश दिया है और अपोजिशन वालों ने भी मान लिया है ।…(व्यवधान)

*m08 **माननीय अध्यक्ष :** आप बोलिए कि अध्यक्ष ने जो भी व्यवस्था दी है कि आसन के सामने या वेल में कोई तख्तियां लेकर आएगा, तो मैं नियम और प्रक्रियाओं का पूरा पालन कराऊंगा । अगर मुझे उस पर कोई कार्रवाई करनी होगी तो मैं करूंगा । ठीक है, यह बात क्लियर है ।

… (<u>व्यवधान</u>)